दैनिक जागरण कानपुर 22 02/2022

मातृभाषा से मिलती पसंद का विषय समझने में मदद

जासं, कानपुर : राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति में मातृ भाषाओं के विकास पर ध्यान दिया गया है। इससे छात्रों को पसंद के विषय समझने में मदद मिलती है। मातृभाषा बहुभाषी समाज के निर्माण और नई भाषाओं को सीखने की क्षमता बढ़ाती है। सीएसए विवि के कुलपति डा. डीआर सिंह ने अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर ये विचार रखे। सीएसजेएमयू के दीनदयाल शोध केंद्र में भी कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

सीएसए में बहुभाषी शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना विषय पर आयोजित कार्यक्रम में कुलपति ने कहा कि भाषायी, सांस्कृतिक विविधता व मातृ भाषाओं के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से यह दिन मनाया जाता है। हिंदी दुनिया में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। वर्ल्ड लैंग्वेज डेटाबेस के 22वें संस्करण में भी दुनिया की 20 सबसे ज्यादा बोली भाषाओं में छह भारतीय भाषाएं शामिल हैं। मातृभाषा से न सिर्फ क्षेत्रीय भाषा को समझने में सहूलियत होती है, बल्कि बातचीत भी आसान होती है। संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2022 और वर्ष 2032 के बीच की अवधि को स्वदेशी भाषाओं के अंतरराष्ट्रीय दशक के रूप में नामित किया है। सीएसजेएमयू में मुख्य अतिथि डा. शिव कुमार दीक्षित ने कहा कि वात्सल्य मातृभाषा का व्याकरण है। प्रति कुलपति प्रो. सुधीर कुमार अवस्थी ने भाषा और संस्कृति का संरक्षण करने पर जोर दिया। डा. पंकज द्विवेदी ने मातृभाषा को किसी भी राष्ट्र के विकास की धुरी बताया। कार्यक्रम का संचालन शुभा सिंह ने किया। इस दौरान कुलसचिव डा. अनिल कुमार यादव, सीडीसी डायरेक्टर डा. आरके द्विवेदी, प्रो. संजय स्वर्णकार, डीन अधिष्ठाता प्रो. सुधांशु पांडिया, शोध सहायक डा. मनीष द्विवेदी आदि रहे। दयानंद गर्ल्स पीजी कालेज के हिंदी विभाग में संगोष्ठी एवं वाद विवाद प्रतियोगिता में प्राचार्य डा. सुनंदा दुबे ने मातृभाषा की महत्ता बताई। जर्मनी, रूस, जापान आदि देश मातृभाषा में ही सारे कार्य करते हैं। संगोष्ठी में छात्राओं निक्की सविता, मिताली पांडेय, ज्योति भट्ट, अंजली सिंह, आस्था शुक्ला ने भी विचार रखे। विभागाध्यक्ष डा. इंदु यादव, डा. सुमन सिंह, डा. मंजुला श्रीवास्तव व डा. अर्चना दीक्षित रहीं।

को मार गिराया, सीमा में घुसने की... 12
शिवपाल सिंह यादव अब समाजवादी पार्टी के... 05

जन एक्सप्रेस

लखनऊ
वर्ष: 13 | अंक: 131
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper
लखनऊ | मंगलवार | 22 फरवरी, 2022

लालू प्रसाद को मिली सजाएं
चार मामलों में सजायाफ्ता हैं
जहरीली शराब का तांडव

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर कुलपति ने दी शुभकामनाएं

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के कुलपति डॉक्टर डी. आर. सिंह ने सोमवार को 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर सभी को शुभकामनाएं दी हैं। कुलपति ने कहा कि दुनिया में भाषाई और सांस्कृतिक विविधता व बहुभाषिकता को बढ़ावा देने के लिए, साथ ही साथ मातृ भाषाओं से जुड़ी जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से यह दिन मनाया जाता है।

उन्होंने कहा कि इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का विषय बहुभाषी शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना चुनौतियां और अवसर है। उन्होंने कहा कि हिंदी दुनिया में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। कुलपति ने बताया कि वर्ल्ड लैंग्वेज डेटाबेस के 22वें संस्करण एथ्नोलॉज के मुताबिक दुनिया भर की 20 सबसे ज्यादा बोली भाषाओं में 6 भारतीय भाषाएं हैं। उन्होंने कहा कि मातृभाषा की मदद से न सिर्फ क्षेत्रीय भाषा के बारे में जानने समझने में सहूलियत मिलती है।बल्कि एक-दूसरे से बातचीत करना भी आसान बन जाता है। उन्होंने कहा कि एक दूसरे से बातचीत करने और विचार साझा करने में भाषा ही अहम माध्यम है। कुलपति ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2022 और वर्ष 2032 के

बीच की अवधि को स्वदेशी भाषाओं के अंतरराष्ट्रीय दशक के रूप में नामित किया है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृ भाषाओं के विकास पर अधिकतम ध्यान दिया गया है। इस नीति में सुझाव दिया गया है कि जहां तक संभव हो शिक्षा का माध्यम कम से कम कक्षा 5 तक मातृभाषा/ क्षेत्रीय भाषा होनी चाहिए। मातृभाषा में शिक्षा दिए जाने से यह छात्रों को उनकी पसंद के विषय और भाषा को सशक्त बनाने में मदद करेगा। यह भारत में बहुभाषी समाज के निर्माण, नई भाषाओं के सीखने की क्षमता आदि में मदद करेगा। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भी देश में उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों में क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देता है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अनुसार शिक्षा का माध्यम जहां तक व्यवहारिक हो बच्चे की मातृभाषा की होनी चाहिए। इसीलिए इसके महत्व को समझने के लिए ही अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है।

WORLD खबर EXPRESS

सोमवार, 21-02-2022 अंक-51
www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

WORLD खबर एक्सप्रेस
MID DAY E-PAPER

अपनी भाषा में सोचें, अपनी मातृभाषा को दें बढ़ावा

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर बोले सीएसए के कुलपति डॉ. डीआर सिंह

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह ने सोमवार को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर सभी को शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया में भाषाई और सांस्कृतिक विविधता व बहुभाषिकता को बढ़ावा देने के साथ ही साथ मातृ भाषाओं के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से यह दिन मनाया जाता है।

उन्होंने कहा कि इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का विषय बहुभाषी शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना चुनौतियां और अवसर है। उन्होंने कहा कि हिंदी दुनिया में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। कुलपति ने बताया कि वर्ल्ड लैंग्वेज डेटाबेस के 22वें संस्करण एथोनोलॉज के मुताबिक दुनिया भर की 20 सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में 6 भारतीय भाषाएं हैं। उन्होंने कहा कि मातृभाषा की मदद से न सिर्फ क्षेत्रीय भाषा के बारे में जानने समझने में सहूलियत मिलती है, बल्कि एक-दूसरे से बातचीत करना भी आसान बन जाता है। उन्होंने कहा कि एक दूसरे से बातचीत करने और विचार साझा करने में भाषा ही अहम माध्यम है।

कुलपति ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2022 और वर्ष 2032 के बीच की अवधि को स्वदेशी भाषाओं के अंतरराष्ट्रीय दशक के रूप में नामित किया है। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृ भाषाओं के विकास पर अधिकतम ध्यान दिया गया है। इस नीति में सुझाव दिया गया है कि जहां तक संभव हो शिक्षा का माध्यम कम से कम कक्षा पांच तक मातृभाषा/ क्षेत्रीय भाषा होना चाहिए। मातृभाषा में शिक्षा दिए जाने से यह छात्रों को उनकी पसंद के विषय और भाषा को सशक्त बनाने में मदद करेगा। यह भारत में बहुभाषी समाज के निर्माण, नई भाषाओं के सीखने की क्षमता आदि में मदद करेगा।

उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भी देश में उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों में क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देता है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अनुसार शिक्षा का माध्यम जहां तक व्यवहारिक हो बच्चे की मातृभाषा होना चाहिए। इसीलिए इसके महत्व को समझने के लिए ही अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है।

वात्सल्य ही मातृभाषा का व्याकरण

हिंदुस्तान कानपुर 22/02/2022

सीएसए

सीएसए के कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने कहा कि दुनिया में भाषाई और सांस्कृतिक विविधता व बहुभाषिकता को बढ़ावा देने के लिए यह दिन मनाया जाता है। वर्ल्ड लैंग्वेज डेटाबेस के 22वें संस्करण एथोनोलांज के मुताबिक दुनिया भर की 20 सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में छह भारतीय भाषाएं हैं।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्षः13 | अंकः30 | देहरादून, सोमवार, 21 फरवरी, 2022 | पृष्ठः08

अपनी भाषा में सोचें, मातृभाषा को दे बढ़ावाः कुलपति डॉ डीआर सिंह

अनिल मिश्रा (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह ने 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर सभी को शुभकामनाएं दी हैं कुलपति ने कहा कि दुनिया में भाषाई और सांस्कृतिक विविधता व बहुभाषिकता को बढ़ावा देने के लिए, साथ ही साथ मातृ भाषाओं से जुड़ी जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से यह दिन मनाया जाता है उन्होंने कहा कि इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का विषय बहुभाषी शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना चुनौतियां और अवसर है उन्होंने कहा कि हिंदी दुनिया में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है कुलपति ने बताया कि वर्ल्ड लैंग्वेज डेटाबेस के 22वें संस्करण एथोनोलांज के मुताबिक दुनिया भर की 20 सबसे ज्यादा बोली भाषाओं में 6 भारतीय भाषाएं हैं उन्होंने कहा कि मातृभाषा की मदद से न सिर्फ क्षेत्रीय भाषा के बारे में जानने समझने में सहूलियत मिलती है बल्कि एक–दूसरे से बातचीत करना भी आसान बन जाता है उन्होंने कहा कि एक दूसरे से बातचीत करने और विचार साझा करने में भाषा ही अहम माध्यम है।

Cultural and linguistic differences giving momentum to multi-linguistics: DR Singh

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

Vice-Chancellor of Chandra Shekhar Azad University of Agriculture and Technology, Dr DR Singh, while addressing the International Mother Tongue Day, said cultural and linguistic differences were gradually giving momentum to multi-linguistics and also making sustained efforts to strengthen mother tongue as well.

He said in the times of artificial intelligence, there was an imperative need for the use of technology for multi-lingual challenges. He said thus every effort had to be made in the country to ensure that India kept pace with the other countries of the world academically. He said the World Language Database 22nd edition showed that out of the 20 most spoken languages six were from India. He said with the help of mother tongue the regional languages flourished and also made their conversation easier.

He said language was the most potent tool to share views and understand them more perfectly. He added that the United Nations had nominated the period between 2022 and 2032 as the International Decade of Indigenous Languages.

He said in the New Education Policy more emphasis had been laid on development of mother tongue and it also suggested that education till class five should be imparted in mother tongue and added that this initiative would help motivate students to take up subjects of their choice and also lay the foundation of the multilingual society and also to pick up other languages as well. Dr Singh said the University Grants Commission had also recommended education in mother tongue and added that objective to observe this mission, International Mother Tongue Day was celebrated. He said mother tongue was the language that a person grew up speaking from early childhood and could be termed as a person's native language. He said thus it was the medium of communication that a person was most familiar with and this familiarity could be used for providing education. He said this year the theme was 'Using technology for multilingual learning: Challenges and opportunities'. Addressing the session, Dr Khaleel Khan said the NEP tried to bring changes in several areas in education and one of them was the medium of instruction in which education would be provided in primary schools. He said understanding the subject matter would boost the confidence of the student and propel one to continue with schooling, thus lowering the drop-out rate. He said educating children in their mother tongue would also build a strong home-school partnership in their learning as parents would be able to participate in their child's education and make the experience of learning for the students more complete. He added that this would also benefit the primary school teachers as many of them found it difficult to express themselves in English and hence were not able to transfer as much knowledge as they would like to, thus creating a knowledge deficit.

He said providing primary education in mother tongue would also decentralise the task of textbook making and would bring the content in textbooks closer to children and make them understand the syllabus better, thus targeting mechanical learning. He said education in mother tongue would help the students in grasping a better sense of their cultural background and therefore help one progress in life roots intact.

He added that providing primary education in mother tongue as now mandated in the National Education Policy was the step in the right direction and if implemented in true spirit it would enhance the learning capabilities of the students and make education a wholesome experience while also resolving the issue of school drop-outs.